उपभोग करते हुए पराशक्तिस्वरूप जीव को अपने यथार्थ दिव्य चित्त तथा बुद्धि का विस्मरण हो जाता है। इस विस्मृति का कारण जीवात्मा पर जड़ प्रकृति के प्रभाव का पड़ना है। परन्तु जब जीव माया के इस बन्धन से स्वतन्त्र हो जाता है तो मुक्तिलाभ करता है। माया से उत्पन्न मिथ्या अहंकार के प्रभाव में वह सोचता है, 'मैं पाँचभौतिक तत्त्व हूँ, और जड़ पदार्थ मेरे हैं।' श्रीभगवान् से एक हो जाने जैसी सब जड़ धारणाओं से मुक्त हो जाने पर ही उसे अपने स्वरूप की फिर प्राप्ति होती है। अस्तु, यह निष्कर्ष निकलता है कि गीता के अनुसार जीव श्रीकृष्ण की असंख्य शक्तियों में से एक शक्ति मात्र है और सांसारिक पाप से पूर्ण शुद्ध हो जाने पर यह शक्ति पूर्णरूप से कृष्णभावनाभावित, अर्थात् मुक्त हो जाती है।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।।६।।

एतत् =ये दोनों शक्तियाँ; **योनीनि** =जन्म की कारण हैं; **भूतानि** =सृष्ट तत्त्वों की; **सर्वाणि** =सम्पूर्ण; **इति** =इस प्रकार; **उपधारय** =जान; **अहम्** =मैं; **कृत्स्नस्य** =सम्पूर्ण; **जगतः** =संसार का; **प्रभवः** =उत्पत्ति; **प्रलयः** =प्रलयरूप **हूँ**; **तथा** =और।

अनुवाद

इस जगत् में जड़ चेतन जो कुछ भी है, वह सब इन दोनों प्रकृतियों से उत्पन्न होता है; इसलिए वास्तव में मैं ही सम्पूर्ण जगत् का उत्पत्ति और प्रलय रूप हूँ।।६।।

तात्पर्य

सम्पूर्ण रचित पदार्थ जड़ प्रकृति और आत्मा के कार्य हैं। आत्मा सृष्टि का आधार है; जड़ प्रकृति इसी आत्मतत्त्व के द्वारा रची गयी है। भौतिक सृष्टि के किसी भी काल में आत्मा का सृजन नहीं होता, अपितु पराशक्ति के रूप में वही इस जगत् का आधार है। इस प्राकृत देह का विकास हुआ है, क्योंकि जड़तत्त्व में आत्मा स्थित है। आत्मा के कारण ही बालक क्रमशः कौमार एवं यौवन को प्राप्त होता है। इसी भाँति बृहत्काय ब्रह्माण्डों की सम्पूर्ण सृष्टि में परमात्मा विष्णु की उपस्थिति कारण है। विराट् ब्रह्माण्डीय सृष्टि के लिए मिलीं आत्मा और जड़ प्रकृति, दोनों मूल रूप में श्रीभगवान् की शक्तियाँ हैं। अतएव श्रीभगवान् ही सम्पूर्ण सृष्टि के आदिकारण सिद्ध हुए। श्रीभगवान् का भिन्न-अंश जीव भौतिकशक्ति का कुशल प्रयोग करके गगनचुम्बी प्रासाद, उत्पादनशाला अथवा नगर आदि का निर्माण कर सकता है, पर शून्य से किसी पदार्थ की संरचना नहीं कर सकता और न ही लोक, ब्रह्माण्ड आदि को रच सकता। सम्पूर्ण जीव-समवाय के परम स्रष्टा और सब कारणों के आदिकारण परमात्मस्वरूप श्रीकृष्ण ही सृष्टि के मूल हैं। इसके प्रमाण में कठोपनिषद् में कहा है: **'नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानाम्।'**

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।७।।